07 JANUARY 2019

007 • 358 | Week 02

Monday

Vijay Kumar The.
Asst prof Deptt in History
V.S.J. College Rajnagar

Degree part I

Town planning and Building art of Harappa and Mohanjodaro

विभिन्न पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर हड़प्पा संस्कृति की विशेषता योजनाबद्ध नगर निर्माण है। इस नगर योजना को दृश्यावलोक के उपरान्त मालूम पड़ता है कि यहाँ एक आधुनिक नगर कि तरह नगर का निर्माण हुआ था जो सुनियोजित ढंग एवं आधुनिकता कि परिकल्पना थी। निश्चय ही हड़प्पा निवासियों को निर्माण का पूर्ण ज्ञान था।

नगर निर्माण कि मुख्य विशेषता हड़प्पा कि सड़कें थी जो सीधी सरल रेखा में एक दुसरे को समकोण पर काटती थी मोहनजोदारो कि सड़कों कि चौड़ाई 9 फीट से 34 फीट तक चौड़ा था। मुख्य राजमार्ग के काटने से ये आयताकार बन गये थे। इन सड़कों से यातायात कि असुविधा नहीं थी। इन्हीं सड़को के किनारे पंक्तिबद्ध भवन निर्मित थे। इन सड़कों के अतिरिक्त छोटी-छोटी गलियां थी जो एक भाग से दुसरे भाग सड़क रास्ते कि तरह सड़कों के एक समकोण काटने के कारण नगर कई भागों में बंट गया था इस पद्धति को oxford system का नाम दिया गया है। सड़के मिट्टी कि बनी थी जिसकी सफाई कि पूर्ण व्यवस्था थी क्योंकि जगह-जगह कुड़ेदान का अवशेष प्राप्त हुआ है सड़कों के दोनो किनारे चबूतरा बना था जिस पर दैनिक दुकान लगता होगा।

मोहनजोदारो प्रभावशाली जल निकास प्रणाली थी अधिकांश भवनों में निजी कुऐं एवं स्नानागार होते थे। भवन के कमरों, रसोईघर, स्नानागार, शौचालय के गंदे जलनिकासी, छोटे-छोटे नालियों के सहारे होता था जो गली कि नाली के सहारे सड़क किनारे बड़े नालों में मिलती थी नालियां पक्के थे और ढके थे। बीच-बीच में मेन होल कि व्यवस्था थी। नालियों के इस परिपक्व व्यवस्था

तत्कालीन समकालीन सभ्यता में नहीं मिलती है।
भवन एक मंजिले एवं दो मंजिले दोनों होते थे। उपरी तल पर जाने के लिये सीढ़ियां बनी थी। भवन में रोशनदान तथा दरवाजे होते थे जो सड़क के पीछे। खिड़की में एकरूपता था भवन धूप में सुखाये कच्ची ईंटों से मिट्टी के गारे के सहारे जोड़ा जाता था। छत सरकंडे तथा अन्य जंगली लकड़ियों के सहारे बनाया जाता था। मिट्टी एवं चूना के सम्मिश्रण से प्लास्टर होता था। भवन में निर्माण के लिये ईंटो का साईज दो प्रकार के थे एक 51.25×21.25×5.60 से०मी० और दूसरा 36.83×18.54×16.10 का होता था। कुंआ के निर्माण में चतुर्भुजाकार ईंटों का प्रयोग होता था। दरवाजा एवं खिड़कीयों लकड़ी के बने होते थे। साधारण भवन दो कमरों का होता था लेकिन उच्च ओहदे वालों के लिये कई कमरे का होता था

मोहनजोदड़ो में एक सार्वजनिक स्नानागार का अवशेष मिले हैं जो 39 फीट लम्बा 23 फीट चौड़ा तथा आठ फीट गहरा है। इसमें स्वच्छ जल तथा गंदे जल कि आपूर्ति एवं निकासी कि व्यवस्था थी। स्नानागार में उतरने के लिये सीढ़ीयाँ बनी थी। उपरी तल पर छोटे-छोटे कमरे बने थे संभवतः इस स्नानागार का प्रयोग सार्वजनिक अनुष्ठान के अवसर पर सार्वजनिक स्नान के लिये होता था। मार्शल महोदय ने इस स्नानागार को आश्चर्यजनक निर्माण बताया है।

अन्नागार — मोहनजोदड़ो में 45.72 मी० लम्बा एवं 22.86 मी० चौड़ा एक अन्नागार मिला है। हड़प्पा के दुर्ग में भी 12 धान्य कोठार मिले हैं ये दो कतारों में छः छः कि संख्या में है। ये धान्य कोठार ईंटो के चबूतरों पर बना है। अन्नागार में वायु आगमन कि व्यवस्था बनी थी अन्नागार में अन्न रखने कि समुचित व्यवस्था थी

हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो में दो टीले मिले हैं पूर्वी टीले पर नगर एवं पश्चिमी टीले पर दुर्ग बना था। दुर्ग के अन्तर्गत शासक वर्ग के लोग

JANUARY						2019
Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

Scanned with Cam

रहते थे। दुर्ग में पारिखा, प्राकार, द्वार, अट्टालक राजमार्ग, प्रासाद, सभा, मल्लशाला आदि वास्तु के सभी तत्व मिलते हैं। दुर्ग के नीचे बाहरी भाग में ईटों के मकान वाला नगर बसा था जहाँ सामान्य लोग रहते थे। नगरों के दुर्ग ऊँची चहारदीवार से घिरे थे इनका निर्माण एक निश्चित योजना के आधार पर हुआ था।

मोहनजोदारो सभ्यता की सबसे आश्चर्यजनक वस्तु नगर स्वास्थ्य एवं सफाई के लिये विभिन्न कमिटियाँ थी जो व समिति में पाँच-पाँच सदस्य होते थे जो आधुनिक नगरपालिका, नगरनिगम नगर कारपोरेशन की तरह थी जिसका काम साफ सफाई एवं जनपयोगी कार्य सम्पादन करना था। यह निश्चित ही आधुनिकता के द्योतक प्रतीत होता है जो तत्कालीन सभ्यता में कल्पना के बाहर है।

एक सभा भवन का भी अवशेष मिले हैं जिसमें पुरोहितों के निवास एवं मन्दिर रहा होगा। यहीं पर सभी एकत्रित होकर दैनिक प्रशासनिक संबन्धी कार्य सम्पादन करते होंगे।

अन्त में हड़प्पा एवं मोहनजोदारो की नगर निर्माण योजना आधुनिकता के अत्यन्त करीब था जो सदियों पूर्व एक मिशाल के तौर पर है।

Scanned with Cam